हिन्दी विभाग

स्नातक तृतीय (III)

पत्र संख्या – 08

* भारतेन्दु युगीन नाट्य रचनाओं को वर्णन करें।

भारतेन्दु युगीन नाट्य रचनाओं को निम्न लिखित वर्गों में बांटा जा सकता है:-

(1.) पौराणिक नाटक
(2.) ऐतिहासिक नाटक
(3.) सामयिक नाटक
(4.) प्रहसन
(5.) रोमानी
(6.) अनूदित

1.) पौराणिक नाटक :- भारतेन्दु काल में रचित सर्वाधिक संख्या पौराणिक नाटकों की है। पौराणिक नाटक मुख्यतः राम, कृष्ण, तथा अन्य पौराणिक विषयों पर आधारित है। इस वर्ग के नाटकों में भारतेन्दु कृत चन्द्रावली (1876), हरिश्चन्द्र दूबे कृत महाराज (1884), कार्तिक प्रसाद खत्री का उद्धरण (1892), अयोध्या सिंह उपाध्याय कृत प्रद्युम्न विजय (1893) तथा रुक्मिणी परिणय (1894), बाल कृष्ण भट्ट कृत नलदमयंती स्वयंवर (1895) आदि रचनाएँ विशेष महत्व की है।

2.) ऐतिहासिक नाटक :- भारतेन्दु कृत नीलदेवी (1881), लाला श्रीनिवासदास कृत संयोगिता स्वयंवर (1886) राधाकृष्ण दास कृत महाराणा प्रताप (1898) महत्वपूर्ण और लोकप्रिय नाटक सिद्ध हुए।

3.) सामयिक :- भारतेन्दु कृत भारत दुर्दशा (1880), बाल कृष्ण भट्ट कृत नई रोशनी का विष (1884) अम्बिकादत्त व्यास कृत भारत सौभाग्य (1887), राधाकृष्ण दास कृत दुखिनी बाला आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इन नाटकों में देश की तत्कालीन दुर्दशा का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है और जन मानस को इन बुराईयों से दूर होने की प्रेरणा प्रतिबिम्बित होती है।

4.) प्रहसन :- हास्य और व्यंग्य शैली में सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक पाखंड पर प्रहार करनेवाले कई नाटकों की इस युग में रचना हुई है। भारतेन्दु कृत वैदिकी हिंसा न भवति, अंधेर नगरी प्रताप नारायण मिश्र कृत कलिकौतुक, राधाचरण गोस्वामी का बूढ़े मुँह मुँहासे प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

5.) रोमानी नाटक :- प्रेम प्रधान नाटकों में श्रीनिवास दास कृत रणधीर प्रेम मोहिनी और तप्ता संवरण, किशोरी लाल गोस्वामी कृत

प्रणयिनी परिणय, शालिग्राम शुक्ल कृत लावण्यवती सुदर्शन महत्वपूर्ण है।

6.) अनूदित — भारतेन्दु युग में संस्कृत बंगला और अंग्रेजी नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया गया जिससे हिन्दी नाट्य लेखन को नवीन रचना दृष्टि और विस्तृत आयाम प्राप्त हुआ। संस्कृत में लीला सीताराम, बंगला से रामकृष्ण वर्मा और अंग्रेजी से अनूदित नाट्य रचना नाट्य रचना में पुरोहित गोपीनाथ प्रमुख है।

इस प्रकार भिन्न भाषा साहित्य से हिन्दी नाटक लेखन का विस्तार हुआ जिसका इस युग में विशेष महत्व रहा है।

प्रस्तुतकर्ता

दिनांक
09/10/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो०-8292227104।